भारतीय खाद्य निगम के व्यय में वृद्धि

66. **श्री रणजीत सिंह** : क्या खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारतीय खाद्य निगम द्वारा प्रशासनिक, रखरखाव पारगम्यता, भंडारण आदि मदों पर किये जाने वाले व्यय की राशि में निरंतर वृद्धि हो रही है ;

(ख) यदि हां, तो गत दो वर्षों में और चालू वित्तीय वर्ष के दिसम्बर महीने तक उपरोक्त में से प्रत्येक शीर्ष पर अलग-अलग कितनी राशि खर्च की गयी है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि भारतीय खाद्य निगम को नष्ट होने वाले खाद्यान्नों के कारण भी प्रतिवर्ष हानि उठानी पड़ती है ; और

(घ) यदि हां, तो उक्त अवधि में निगम को कितनी राशि की हानि उठानी पड़ी है ?

खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री (श्री राव बीरेन्द्र सिंह) : (क) और (ख) भारतीय खाद्य निगम द्वारा 1988-89 से 1990-91 तक के वर्षों में केन्द्रीय खाते पर अपने विवरण परिचालनों की विभिन्न मदों पर किए गए खर्च का ब्यौरा नीचे दिया गया है :--

(करोड़ रुपयों में)

खर्च की मद	1988-89	1989-90	1990-91 (दिसम्बर, 1990 तक) अनुमानित
परिवहन	455.54	491.00	410.00
अनाज की हैंडलिंग	127.96	138.29	121.00
भण्डारण प्रभार	312.75	248.14	204.00
ब्याज प्रभार	195.82	241.57	392.00
हैंडलिंग में हानियां	106.01	77.19	60.00
प्रशासनिक प्रभार	179.72	143.44	126.00

(ग) भारतीय खाद्य निगम कोई खाद्यान्न नष्ट नहीं करता । तथापि, मौसम, बाढ़ों आदि की अनिश्चितता के कारण कौर/ढके हुए भण्डारण स्थानों में रखा गया स्टाक कभी कभी प्रभावित हो जाता है, जोकि क्षतिग्रस्त हो जाता है और बाद में उसका पशुचारे, मुर्गी दाने आदि के रूप में निपटान करना अपेक्षित हो जाता है । तथापि, इसमें से मामूली मात्रा को फैंक देना पड़ता है ताकि और अधिक संदूषण को रोका जा सके।

(घ) 1988-89 और 1989-90 के दो वर्षों के दौरान कुल 12,337 मीटरी टन खाद्यान्न फैंक दिए गए थे, जोकि कुल कारोबार का 0.018% बैठते हैं।

गेहूं के मूल्यों में वृद्धि

67. **श्री बलराम सिंह यादव** :
डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :

क्या खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दिल्ली और इसके आस पास के क्षेत्रों में पिछले दिनों में खुले बाजार में गेहूं के मूल्यों में अचानक भारी वृद्धि हुई है ;